DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
SRAP College, Barachakia
BRABU - Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — III

Subject — Sanskrit

Paper — VI

6X5=30 Marks

[illegible]

समासप्रकरणे सूत्रव्याख्या

6. कर्तृकरणे कृता बहुलम् — यह विधि सूत्र है। कर्तृवाची और करणवाची जो तृतीयान्त सुबन्त, वे समर्थ कृदन्त सुबन्त के साथ बहुल करके समास को प्राप्त होते हैं और वह तत्पुरुष समास होता है — यह सूत्रार्थ है। उदाहरणार्थ — 'हरिणा त्रातः' में रक्षण क्रिया का कर्ता 'हरि' है। उस 'हरि' कर्ता में तृतीया 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से हुई है। अतः यह कर्तृवाची है। 'नखैः भिन्नः' में भेदन क्रिया का करण कारक 'नख' है, इसीलिए यहाँ पूर्वोक्त सूत्र से करण कारक में तृतीया हुई है, अतः यह करणवाची है। त्रातः और भिन्नः क्त प्रत्ययान्त हैं। क्त की 'कृदतिङ्' से कृत् संज्ञा होती है। ऐसी स्थिति में कर्तृवाची तृतीयान्त सुबन्त 'हरिणा' का समर्थ कृदन्त सुबन्त 'त्रातः' के साथ प्रकृत सूत्र से समास, विभक्ति लोप तथा पुनः पदविधान करने पर 'हरित्रातः' रूप होता है। इसी प्रकार करणवाची तृतीयान्त सुबन्त नखैः का समर्थ कृदन्त सुबन्त भिन्नः के साथ प्रकृत सूत्र से समास विधान करने पर 'नखभिन्नः' पद सिद्ध होता है।

सूत्रस्थ 'बहुलम्' पद का स्पष्टीकरण आवश्यक है जो बहुत अर्थों को प्राप्त करावे, उसे बहुल कहते हैं। यह चार प्रकार का होता है —

क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति॥

अर्थात् कहीं पर विधि न प्राप्त होते हुए भी कार्य होना, कहीं पर विधि प्राप्त होते हुए भी कार्य न होना, कहीं विकल्प से होना तथा कहीं अन्य अन्य ही हो जाना — यह चार प्रकार का बहुल देखने में आता है। सूत्र में बहुलग्रहण के कारण ही 'दात्रेण लूनवान्' यहाँ समास नहीं हुआ। यहाँ सूत्रोक्त समस्त उपाधियाँ विद्यमान हैं, फिर भी समास विधान नहीं होता — यही बहुल ग्रहण का प्रयोजन है।

———o———

क्रमशः जारी